LOOK N LEARN
Children's Jain
E-book

Serial No. 45

The knowledge of
32 Aagams
in your phone

To subscribe please Watts app - Jai Jinendra on +91 8104461579

Inspired by Rashtrasant Param Gurudev Shree Namramuni Maharaj Saheb

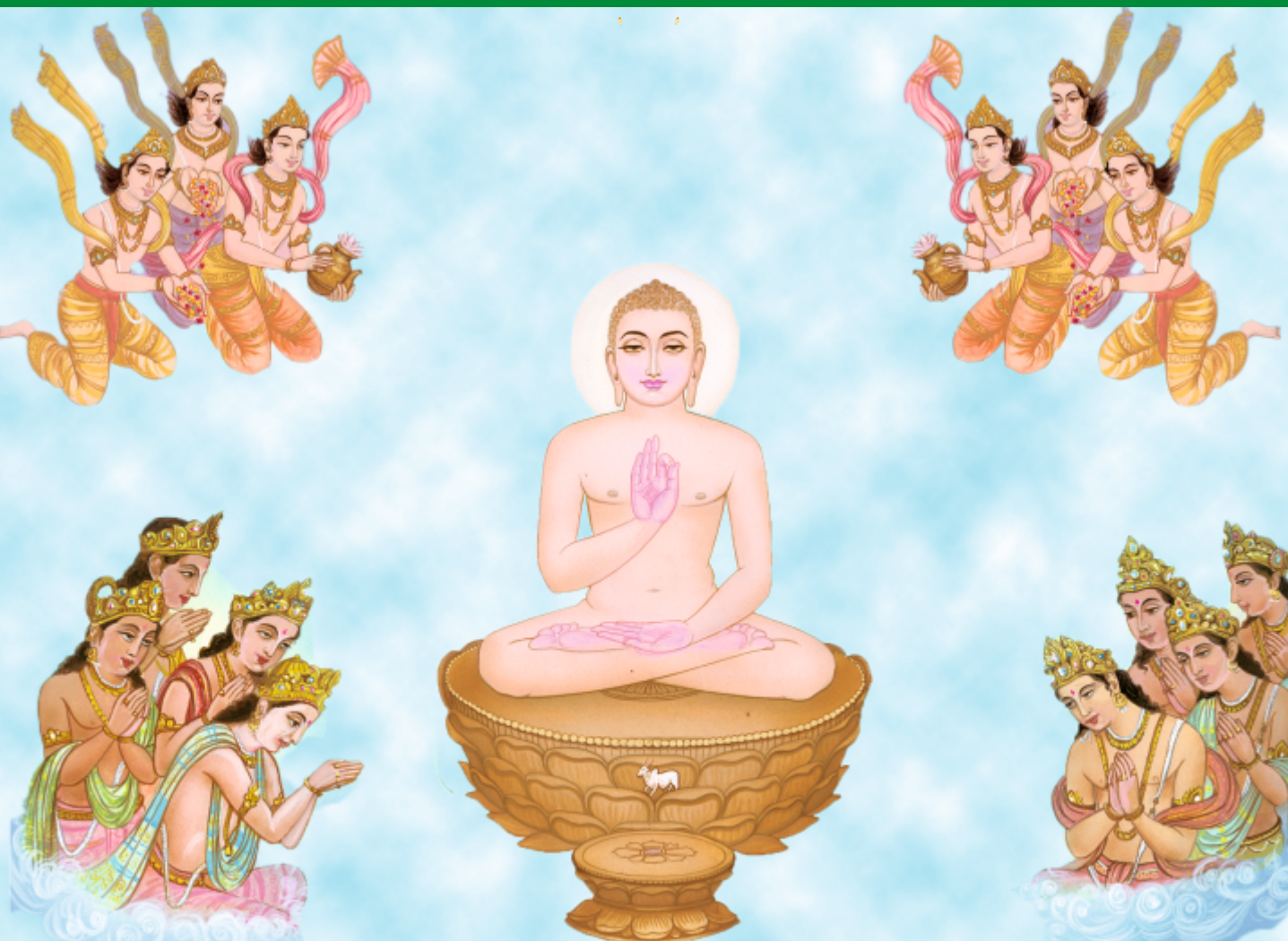

નમસ્કાર નમોત્થુણં પદને જેને નમે ઈન્દ્ર નરનારરે!!

शक्रेन्द्र महाराज (इन्द्रदेव) भी परमात्मा के गुणगान करत है वह स्तुती कितनी अनमोल है।

Namotthunam
नमोत्थुणं

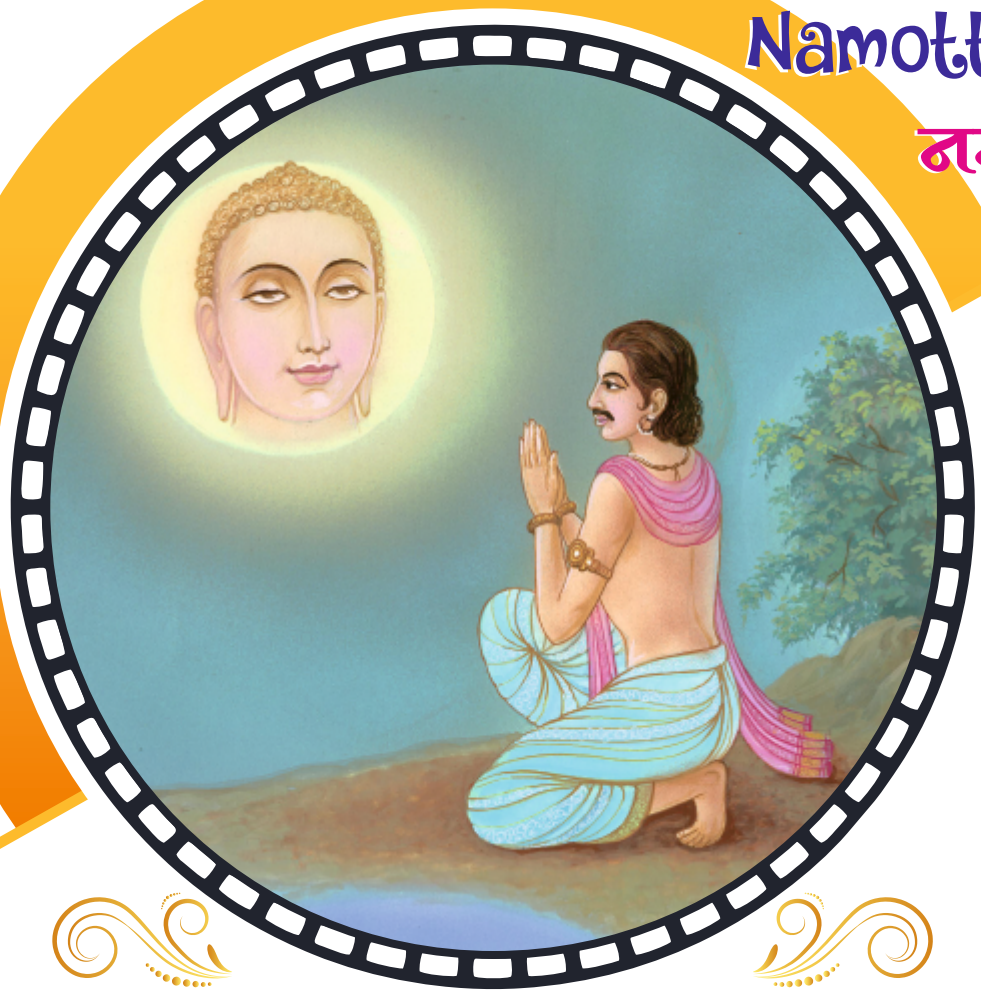

नमोत्थुणं को आगम में "थव थुई मंगलम्" कहते है।

नमोत्थुणं का दूसरा नाम "शक्रस्तव" है क्योंकि नमोत्थुणं सूत्र द्वारा तीर्थंकर परमात्मा की स्तुती देवलोक के इन्द्र शकेन्द्र भी करते है।

अहो! देवो भी जिनकी स्तुति करे वह स्तुति कितनी अनमोल होगी... अद्भूत होगी! लोगस्स में चौवीस (२४) तीर्थंकरों के नाम स्मरण की स्तुति होती है और नमोत्थुणं में तीनों काल के तीर्थंकरों और सिद्ध भगवंतों के गुणों की स्तुति होती है।

In the Aagam, Namotthunam is called "Thav thui Mangalam".

Another name for Namotthunam is "Shakrastav Stotra" because through this Stotra, the Indra of devlok whose name is "Shakendra Maharaj" sings praises of Tirthankar Parmatma.

Oh! When even Devs of Devlok sing praises how precious and how sacred it must be! When we chant Loggassa Stotra we sing praises to our 24 present Tirthankars, but when we chant the Namotthunam Stotra, we sing praises of all the past, present and future Tirthankars and also of all the Siddha Bhagwant.

नमोत्थुणं ३ बार क्यों ?

Why should we recite Namothunam thrice?

प्रथम नमोत्थुणं सिध्ध भगवंत को करते है।

The first Namotthunam is recited for the Siddh Bhagwan.

अरिहंत भगवान से सिध्ध भगवान बड़े है। सिध्ध भगवान ने आठ कर्म को क्षय किया है।

The Siddh Bhagwants are said to be in a higher order than the Arihant Bhagwants. They have conquered all 8 karmas.

द्वितीय नमोत्थुणं सिध्ध बनने का मार्ग बतानेवाले अनंत उपकारी अरिहंत भगवंतो को करना है।

The second Namotthunam is recited for Arihant Bhagwants because they guide us on our journey to become a Siddha.

अरिहंत भगवानने ४ कर्म क्षय किये है।

They have conquer 4 types of karmas.

तिसरा नमोत्थुणं
हमारे अनंत ज्ञान को प्रगटानेवाले
असीम उपकारी गुरुदेव को करते है।

The third Namotthunam is
recited for the Guru who help us to
enlighten our path of infinite knowledge.

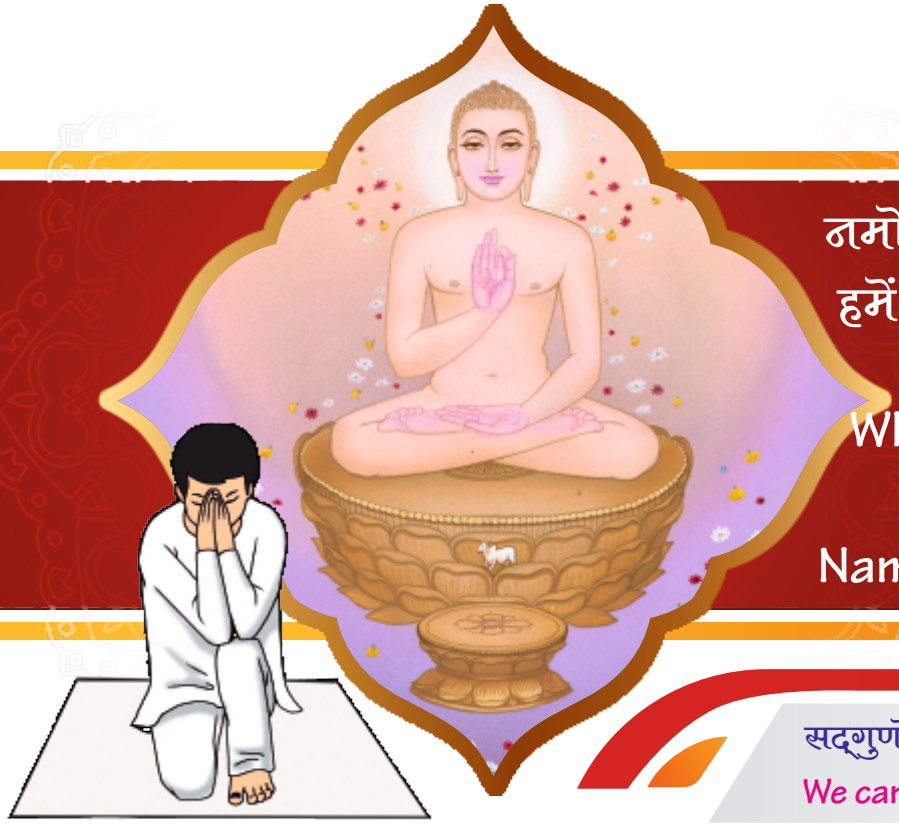

नमोत्थुणं सूत्र बोलने से हमें क्या प्राप्त होता है?

What do we achieve by reciting Namothunam Sootra?

सद्गुणों की प्राप्ति होती है।

We can cultivate more good deeds.

परमात्मा के गुणों का बारबार स्मरण करने से हमे उनके जैसे बनने के भाव प्रगट होतें है।

By reciting the Stotra repeatedly, we feel like becoming like Parmatma.

नमोत्थुणं बोलने से हम निडर, निर्भय बनतें है।

We can overcome our fears.

दर्शन, चारित्र की बोधि प्राप्त होती है।

We acquire right vision and right conduct.

परमात्मा की भक्ति करने से हम पाप से बच सकते है।

We can overcome our urge to commit sins.

धर्म के प्रति रुचि बढ़ने से भविष्य में जैन धर्म मिल सकता है।

Due to our interest in religion, our chances of taking birth in Jainism increases.

अंदर में रहा हुआ डर बाहर निकल जाता है।

We can overcome our deep-seated fears and phobias.